अध्याय 39.
अभक्ष्य पदार्थ

1. अभक्ष्य किसे कहते हैं ?

जो पदार्थ खाने (भक्षण करने) योग्य नहीं होता, उसे अभक्ष्य कहते हैं।

2. अभक्ष्य कितने प्रकार के होते हैं ?

अभक्ष्य 5 प्रकार के होते हैं। त्रसघातकारक, प्रमादवर्धक, बहुघातकारक, अनिष्टकारक और अनुपसेव्य।

1. **त्रसघात कारक**-जिस पदार्थ के खाने से त्रसजीवों का घात हो। जैसे-बड़, पीपल, पाकर, ऊमर, कठूमर, माँस, मधु, अमर्यादित भोजन और घुना अन्न आदि।
2. **प्रमादवर्धक**-जिस पदार्थ के खाने-पीने से प्रमाद और आलस्य आता है। जैसे-शराब, गाँजा, भाँग हेरोइन, चरस, कोकीन, ब्राउन शुगर, अफीम, बीड़ी, सिगरेट, गुटखा और जर्दा आदि नशाकारक पदार्थ।

   नोट- किंगफिशर, बेगपाइपर आदि भी शराब हैं।
3. **बहुघातकारक**-जिसमें फल तो अल्प हो और बहुत त्रसजीवों के घात हो। जैसे-गीला अदरक, मूली, नीम के फूल, केवड़े के फूल, मक्खन एवं समस्त जमीकंद आदि।
4. **अनिष्टकारक**-जो आपकी प्रकृति-विरुद्ध हैं। जैसे-खांसी में दही का सेवन, बुखार में घी का सेवन, हृदय रोग में घी और तेल का सेवन, डायविटीज में शक्कर का सेवन, मोतीझिरा बुखार में अन्न का सेवन और ब्लडप्रेशर बढ़ने पर नमक का सेवन करना आदि अनिष्टकारक हैं।
5. **अनुपसेव्य**-जो सज्जन पुरुषों के सेवन करने योग्य नहीं हैं। जैसे-गोमूत्र, ऊँटनी का दूध, शङ्खचूर्ण, पान का उगाल, लार, मूत्र, पुरीष और खकार आदि।

3. द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव अभक्ष्य किसे कहते हैं ?

द्रव्य-जैसे-किसी ने प्रासुक भोजन बनाया और उस भोजन को कुत्ता और बिल्ली आदि ने जूठा कर दिया तो वह अभक्ष्य हो गया या उसमें कोई अशुद्ध पदार्थ गिर गया।

क्षेत्र-अपवित्र स्थान पर बैठकर भोजन करना क्षेत्र अभक्ष्य है।

काल-काल की अपेक्षा तो स्पष्ट है मर्यादा के बाद वह पदार्थ अभक्ष्य है। लीस्टर देश में 8 घंटे के बाद मिठाई फेंक देते हैं।

भाव-भोजन करते समय यह भोज्य वस्तु माँस, रुधिर और मदिरा के सदृश है, ऐसा स्मरण होते ही वह भोजन भाव अभक्ष्य है।

4. चलित रस अभक्ष्य किसे कहते हैं ?

जो पदार्थ स्पर्श, रस, गन्ध और वर्ण से चलायमान हो गए हैं, ऐसे पदार्थों को भी नहीं खाना चाहिए, क्योंकि ऐसे पदार्थों में अनेक त्रस जीवों की और अनन्त निगोद राशि की उत्पत्ति अवश्य हो जाती है।(लाटी संहिता, 56)

5. पञ्च उदुम्बरों के त्यागी को क्या-क्या त्याग कर देना चाहिए ?

जिसने पञ्च उदुम्बरों का त्याग किया है, उसे समस्त प्रकार के अज्ञात (अजान) फलों का त्याग कर देना चाहिए।[1] अजान फलों (वस्तुओं) के खाने से पूर्व में अनेक व्यक्तियों के मरण हो चुके हैं।

6. दही भक्ष्य है या अभक्ष्य ?

दही भक्ष्य है। जो दही इस विधि से तैयार किया है, वह भक्ष्य है-दूध दुहने के प्रथम समय से लेकर अन्तर्मुहूर्त के अंदर उबाल लिया है, ऐसे दूध में 24 घंटे के अन्दर चाँदी का सिक्का, बादाम, खड़ी लाल-मिर्च, अमचूर आदि डालकर दही जमाया जाता है, ऐसे दही में बैक्टेरिया नहीं होते हैं, यह दही भक्ष्य है।

7. नवनीत (मक्खन) भक्ष्य है या अभक्ष्य ?

मद्य, माँस, मधु एवं नवनीत को महाविकृति कहा है। अतः यह अभक्ष्य है।[2] नवनीत की मर्यादा अन्तर्मुहूर्त एवं पंडित आशाधरजी ने दो मुहूर्त कहा है। वह घी बनाने के उद्देश्य से कहा है, खाने के उद्देश्य से नहीं।[3]

8. अष्टपाहुड की टीका करने वाले आचार्य श्रुतसागरजी सूरि ने चारित्रपाहुड की टीका 21 में द्विदल अभक्ष्य किसे कहा है ?

द्विदलान्न मिश्रं दधितक्रं स्वादितं सम्यक्त्वमपि मलिनयेत्-द्विदलान्न के साथ मिलाकर खाए हुए दही और तक्र (छाछ) सम्यग्दर्शन को भी मलिन कर देता है, अतः इनका त्याग कर देना चाहिए।

9. अभक्ष्य इतने ही हैं कि और भी हैं ?

वर्तमान में विवाह और जन्मदिन आदि की पार्टियों में दाल बाफले, तंदूरी, छोले-भटूरे आदि चलते हैं, इनमें दही मिलाया जाता है, अतः द्विदल है तथा बाजार में मिलने वाले पदार्थों में बहुत से पदार्थ अभक्ष्य हैं। जैसे-बन्द डिब्बों की आइसक्रीम, जिलेटिन, चाँदी का वर्क, अजीनोमोटो, साबूदाना, नींबू का सत्त्व (टाटरी) और मैगी आदि।

अभ्यास

सही या गलत बताइए -

1. मक्खन बहुघात अभक्ष्य है।
2. पञ्च उदुम्बर बहुघात अभक्ष्य हैं।
3. डायबिटीज में शक्कर खाना अभक्ष्य है।
4. घी से दुर्गन्ध आ रही है तब वह अभक्ष्य है।

अन्यत्र खोजिए -

1. बन्द डिब्बों की आइसक्रीम, जिलेटिन, चाँदी का वर्क, अजीनोमोटो, साबूदाना और नींबू का सत्त्व अभक्ष्य क्यों है ?
2. द्विदल कितने प्रकार के होते हैं ?
3. तरबूज (कलींदा) को कौन-कौन से ग्रन्थ में अभक्ष्य कहा है ?
4. कमलनाल को कौन से आचार्य ने अभक्ष्य कहा है ?

1. सागार धर्मामृत, 3/14 2. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, 71 3. श्रावकाचार संग्रह भाग-4, 4/166

आहार की वस्तुओं की मर्यादा

	सामग्री	शीत ऋतु	ग्रीष्म ऋतु	वर्षा ऋतु
1.	बूरा	1 माह	15 दिन	7 दिन
2.	**अ.** दूध (दुहने के पश्चात्)	अन्तर्मुहूर्त	अन्तर्मुहूर्त	अन्तर्मुहूर्त
	ब. दुहने के समय से अन्तर्मुहूर्त में उबाला हुआ	24 घण्टे	24 घण्टे	24 घण्टे
3.	दही, छाछ (गर्म दूध का) चारित्रपाहुड 21 की टीका के अनुसार	48 घण्टे	48 घण्टे	48 घण्टे
4	**अ.** छाछ बिलोते समय पानी डालने पर	12 घण्टे	12 घण्टे	12 घण्टे
	ब. बाद में पानी डालने पर	48 मिनिट	48 मिनिट	48 मिनिट
5.	मीठे पदार्थ मिला दही	48 मिनिट	48 मिनिट	48 मिनिट
6.	घी	जब तक स्वाद न बिगड़े		
7.	तेल	जब तक स्वाद न बिगड़े		
8.	गुड़	जब तक स्वाद न बिगड़े		
9.	आटा सभी प्रकार का	7 दिन	5 दिन	3 दिन
10.	पिसे हुए मसाले	7 दिन	5 दिन	3 दिन
11.	पिसा नमक	अन्तर्मुहूर्त	अन्तर्मुहूर्त	अन्तर्मुहूर्त
	मसाला मिला नमक	6 घण्टे	6 घण्टे	6 घण्टे
12.	नमक मिला कच्चा भोजन	9 घण्टे	6 घण्टे	6 घण्टे
13.	नमक मिला पक्का भोजन (पुड़ी, पपड़िया, कचौरी आदि)	24 घण्टे	24 घण्टे	24 घण्टे
14.	दाल, भात, कढ़ी आदि	6 घण्टे	6 घण्टे	6 घण्टे
15.	रोटी	12 घण्टे	12 घण्टे	12 घण्टे
16.	बिना पानी के पकवान	7 दिन	5 दिन	3 दिन
17.	गुड़ मिला दही	सर्वदा अभक्ष्य		
18.	अचार	24 घण्टे	24 घण्टे	24 घण्टे

(श्रावकाचार संग्रह, 4/165 एवं जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश, 3/202)

विशेष- प्रसूति के बाद भैंस का दूध 15 दिन तक, गाय का दूध 10 दिन तक एवं बकरी का दूध 8 दिन तक अभक्ष्य है।